Gyan Manthan
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

बी.एड.उपाधि प्राप्त विद्यार्थियों के व्यावसायिक जीवन में बी.एड. पाठ्यक्रम की उपयोगिता का अध्ययन

भारती सिकरवार[1]
सहायक प्राध्यापक, एस्पायर इंस्टीट्यूट इंदौर

सारांश

वर्तमान समय में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह व्यक्तित्व विकास, व्यावसायिक दक्षता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा राष्ट्रीय निर्माण का सशक्त साधन बन चुकी है। शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में बी.एड. (Bachelor of Education) पाठ्यक्रम एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य भावी शिक्षकों को शिक्षण कौशल, कक्षा-प्रबंधन, मूल्यांकन क्षमता, मनोवैज्ञानिक समझ तथा व्यावसायिक दक्षताओं से संपन्न बनाना है। प्रस्तुत शोध पत्र में बी.एड. उपाधिधारकों के व्यावसायिक जीवन में बी.एड. पाठ्यक्रम की उपयोगिता का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि बी.एड. पाठ्यक्रम से अर्जित ज्ञान, कौशल एवं मूल्य वर्तमान व्यावसायिक जीवन में किस सीमा तक उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि बी.एड. पाठ्यक्रम केवल शिक्षकीय व्यवसाय में ही नहीं, बल्कि गैर-शिक्षकीय क्षेत्रों में भी संप्रेषण कौशल, नेतृत्व क्षमता, प्रस्तुतीकरण कौशल, प्रबंधन दक्षता तथा सामाजिक संवेदनशीलता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः बी.एड. पाठ्यक्रम की उपयोगिता बहुआयामी एवं व्यावसायिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द *:* बी.एड. पाठ्यक्रम, शिक्षक शिक्षा, व्यावसायिक जीवन, शिक्षकीय दक्षता, व्यावसायिक उपयोगिता

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार है। यह व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक एवं व्यावसायिक विकास का सशक्त माध्यम है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसकी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता पर निर्भर करती है, और शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता मुख्यतः शिक्षक की गुणवत्ता से निर्धारित होती है। इसलिए शिक्षक शिक्षा का विशेष महत्व है।

शिक्षक शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शिक्षकों को शिक्षण कार्य हेतु आवश्यक ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण तथा मूल्यों से प्रशिक्षित किया जाता है। बी.एड. पाठ्यक्रम शिक्षक शिक्षा का एक प्रमुख अंग है, जो भावी शिक्षकों को व्यावसायिक रूप से दक्ष बनाने हेतु निर्मित किया गया है। इसमें शिक्षण विधियाँ, शैक्षिक मनोविज्ञान, मूल्यांकन, कक्षा-प्रबंधन, शैक्षिक तकनीकी, सूक्ष्म शिक्षण, इंटर्नशिप एवं क्रियात्मक शोध जैसे विषय सम्मिलित होते हैं।

आज के समय में बी.एड. पाठ्यक्रम की उपयोगिता केवल शिक्षण क्षेत्र तक सीमित नहीं है। यह पाठ्यक्रम व्यक्तियों में संप्रेषण कौशल, नेतृत्व क्षमता, निर्णय क्षमता, प्रस्तुतीकरण कौशल तथा सामाजिक संवेदनशीलता का विकास करता है, जो विविध व्यावसायिक क्षेत्रों में समान रूप से उपयोगी हैं। अतः बी.एड. पाठ्यक्रम की उपयोगिता का अध्ययन वर्तमान संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है।

शिक्षा का अर्थ

शिक्षा को अंग्रेजी भाषा में एजुकेशन कहते हैं। एजुकेशन शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के एडुकेटम शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है - शिक्षित करना । शिक्षा का संबंध बालक के उन सभी अनुभवों से है, जिसका प्रभाव उसके ऊपर जन्म से लेकर मृत्यु तक पड़ता है। शिक्षा वह नियंत्रित वातावरण है, जिस में रहते हुए बालक अपनी प्रकृति के अनुसार स्वतंत्रता पूर्वक अनेक प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है। बालक जो भी कुछ सीखता है, वह शिक्षा के माध्यम से सीखता है। शिक्षा में शिक्षक तथा बालक दोनों का महत्व समान होता है। शिक्षा एक त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया है, जिसके तीन महत्वपूर्ण रूप है शिक्षक, विद्यार्थी तथा विषयवस्तु। शिक्षा के इन तीनों धर्मों के माध्यम से ही शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति संभव है, जिस में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक अपनी योग्यताओं के आधार पर विषय से संबंधित ज्ञान, कौशल तथा अभ्यर्थियों का निर्माण करता है। अतः शिक्षा की प्रक्रिया को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए शिक्षा की प्रभाविता आवश्यक है, अतः शिक्षा की एक महत्वपूर्ण शाखा है, शिक्षक शिक्षा।

शिक्षा की परिभाषा

विभिन्न विद्वानों ने शिक्षा को निम्न प्रकार परिभाषित किया है -

सुकरात के अनुसार -

"शिक्षा का अर्थ है प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में अदृश्य रूप से विद्यमान संसार के सामान्य विचारों को प्रकाश में लाना।"

फ्रोबेल के अनुसार -

"शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियां बाहर प्रकट होती हैं।"

विवेकानंद के अनुसार -

"शिक्षा मनुष्य के अंदर सन्निहित पूर्णता का प्रदर्शन है।"

बी.एड. पाठ्यक्रम का अर्थ

बी.एड. पाठ्यक्रम का अर्थ है- प्रशिक्षित करना। बी.एड. पाठ्यक्रम के द्वारा शिक्षक तथा वे विद्यार्थी जो शिक्षण क्षेत्र में आना चाहते हैं, उन्हें प्रशिक्षित करने का पाठ्यक्रम है। इस पाठ्यक्रम के द्वारा शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाता है, जिससे वे शिक्षण कार्य को उत्तम बना सके तथा विद्यार्थी का विकास कर सके। इस पाठ्यक्रम में शिक्षक को शिक्षण से जुड़ी विभिन्न प्रकार की विधियों, प्रविधियों, कौशलों तथा बाल मनोविज्ञान में प्रशिक्षित किया जाता है, जिससे शिक्षक विद्यार्थी के व्यक्तित्व, उनकी शिक्षण क्षमता तथा रुचि को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य कर सकें।

बी.एड. एक व्यवसायिक पाठ्यक्रम है तथा राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् के अनुसार सभी शिक्षकों के लिए बी.एड. पाठ्यक्रम होना आवश्यक है।

परिभाषा

"बी.एड. उपाधिधारक द्वारा बी.एड. पाठ्यक्रम में अध्ययन किए गए विषयों के माध्यम से सीखे या अर्जित किए गए ज्ञान, कौशल व मूल्यों का वर्तमान व्यवसाय में उपयोग ही बी.एड. पाठ्यक्रम की उपयोगिता है।"

शिक्षकीय पेशे में बी.एड. पाठ्यक्रम का महत्व

शिक्षकीय पेशे में बी.एड. पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण स्थान है। बी.एड. प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात शिक्षक में विभिन्न गुणों का विकास होता है जिससे वह अपने शिक्षण कार्य को प्रभावशाली बनाता

है। शिक्षक को विषय से संबंधित शिक्षा- शास्त्र में प्रशिक्षण देता है। शिक्षकों में बाल मनोविज्ञान का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे शिक्षक कक्षा में विभिन्न पृष्ठभूमि से आए विद्यार्थियों की रुचि, क्षमता के अनुसार शिक्षण कार्य करता है। शिक्षकों में विषय से संबंधित नवीन विधियों, प्रविधियों, कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे वह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाता है।

एक शिक्षक के जीवन में बी.एड. का प्रशिक्षण शिक्षण कौशल सीखने तक सीमित नहीं है। बी.एड. पाठ्यक्रम में शिक्षा के प्रशासनिक पहलू को भी शामिल किया जाता है, जिससे शिक्षा एक स्वस्थ शैक्षणिक संस्था संरचना के निर्माण में योगदान देता है।

उद्देश्य

1. शिक्षकीय के पेशे से संबंधित बी.एड. उपाधि धारकों के व्यावसायिक जीवन में बी.एड. पाठ्यक्रम की उपयोगिता का अध्ययन करना।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

रेड्डी (1972) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को उनकी व्यावसायिक पसंद और उनके चर के संबंध में व्यावसायिक आवश्यकताओं का अध्ययन किया। अध्ययन के निम्न निष्कर्ष थे- 1 व्यवसायिक जरूरतें शक्ति, गतिविधि, नैतिक मूल्य, जिम्मेदारी, संतुष्टि, उन्नति, मानवीय संबंध सेवा, रचनात्मक आदि अलग-अलग इलाकों से आने वाले विषय अलग-अलग नहीं थे। 2 उनकी सामाजिक स्थिति के लिए विषयों के व्यावसायिक विकल्प महत्वपूर्ण रूप से संबंधित पाए गए।

जॉन (1981) ने व्यावसायिक रूचि और आत्म अवधारणा के बीच संबंध का अध्ययन 180 संस्थागत और 540 गैर संस्थागत छात्रों में उच्च मध्यम और निचले सामाजिक स्तर के दोनों लिंगों के किशोरों पर किया। शोध से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि किशोरों के व्यावसायिक हित का सीधा संबंध उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति से था। मध्यम वर्ग के किशोरों में भविष्य के अभिविन्यास के प्रति अधिक स्थिर आत्मा अवधारणाएं हैं।

गुप्ता और रायजादा (1991) ने कर्नाटक राज्य में वी.ई.पी. पर अध्ययन किया। अध्ययन से यह प्राप्त हुआ कि राज्य में मौजूद पाठ्यक्रमों में लचीलापन है, जो नए पाठ्यक्रमों की शुरुआत में है। सरकार ने निजी व सरकारी संस्थानों में व्यावसायिक पाठ्यक्रम की शुरुआत की। शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि लगभग राज्य में 88% छात्र जो निम्न और मध्यम वर्ग की श्रेणी में आते हैं, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेते हैं, जो उनकी रुचि या जल्द नौकरी पाने के कारण करते हैं। कुछ छात्र व्यावसायिक पाठ्यक्रम में इसलिए प्रवेश करते हैं, क्योंकि उन्हें पाठ्यक्रम पसंद है या अकादमी का अध्ययन करने में कोई रुचि नहीं है। शोधकर्ता निष्कर्ष प्राप्त करते हैं कि वाणिज्य के छात्र जो अधिकांश इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम में स्वरोजगार या वेतन के लिए जाना पसंद करते हैं, पाठ्यक्रम पूरा होने के पश्चात सामान्य धारा में शामिल हो जाते हैं ।

चालावाडी (1992) ने कर्नाटक राज्य में उच्च माध्यमिक स्तर पर लड़कियों के लिए व्यावसायिक शिक्षा का अध्ययन किया। अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए- व्यावसायिक समूह के छात्रों ने सभी पहलुओं में सकारात्मक परिणाम दिखाया, केवल आत्म अवधारणा और समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं दिखा। अन्य सभी पहलुओं में जैसे - अकादमी प्रेरणा, आत्मसम्मान, आत्म पहचान, व्यावसायिक आकांक्षा स्कूल के प्रति दृष्टिकोण व्यावसायिक शिक्षा के प्रति काफी अलग है । शैक्षणिक पाठ्यक्रम के छात्रों के परिणामों से यह अनुमान लगाया जाता है कि व्यावसायिक समूह के छात्र व्यावसायिक विषय के महत्व, लाभ तथा अध्ययन करने के विषय में पूरी तरह से अवगत थे। वे छात्र जिनकी व्यावसायिक विषय में रुचि और योग्यता थी उनकी शिक्षा भी अनुकूल थी। व्यावसायिक शिक्षा के प्रति माता-पिता व्यावसायिक समूह के छात्रों के माता-पिता से काफी भिन्न है। इससे पता चलता है कि माता-पिता का रवैया भी व्यवसायिक शिक्षा धारा के प्रति प्रभावी रवैया है ।

एनसीईआरटी (2000) के अनुसार कि व्यावसायिकरण अचानक नहीं आया है, लेकिन शिक्षा के बीच गठजोड़ से धीरे-धीरे मजबूत होने तथा उत्पादकता के माध्यम से राष्ट्रीय विकास का परिणाम है

। उनका दावा है कि व्यावसायिक शिक्षा इस खाई को पाटने का प्रयास है । उनका दावा है कि आई. टी. आई. और पॉलिटेक्निक आमतौर पर संगठित औद्योगिक क्षेत्र को पूरा करेगा । स्कूल कार्यक्रमों को उन क्षेत्रों में जोर देने की उम्मीद करनी चाहिए ना कि उन्हें ढांका जाए और संभावित रूप से बड़े सेवा क्षेत्र पर किया जाना चाहिए । व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की सफलता एक वांछित जुड़ाव है जो रोजगार की गारंटी लेता है जिन से छात्र जुड़े हैं।

तोरकातो (2006) ने व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम पर एक अध्ययन और गोवा में उद्यमिता और रोजगार के अवसरों प्रभाव का अध्ययन किया। शोध से प्राप्त निष्कर्ष है कि - सन 2001-02 में एच. एस. एस. स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के पाठ्यक्रम को संशोधित किया गया था, जिससे अधिकांश छात्र संतुष्ट है लेकिन पाठ्यक्रम कॉलेज स्तर के व्यावसायिक विषयों के लिए पाठ्यक्रम संशोधित नहीं किया गया। एच. एस. एस. द्वारा अधिकांश व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की पेशकश की गई थी तथा जो कॉलेज तालुका में है । संस्थानों की विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की पेशकश करने वाले अन्य तालुको में संस्थानों की संख्या अधिक पाई गई।

देवी (2014) ने गुवाहाटी विश्वविद्यालय के तहत सामान्य डिग्री कॉलेजों में व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम का एक मूल्यांकन अध्ययन किया। अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए- अध्ययन में पाया गया कि लगभग आधे छात्र अपने व्यावसाय का चयन रोजगार की संभावना के आधार पर पाठ्यक्रम का चयन करते हैं। इसके अलावा कुछ छात्र पाठ्यक्रम का चयन अपने हित में पसंद करते हैं जबकि कुछ अपने स्व-उद्देश्य के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रम का चयन करते हैं। छात्र उपलब्ध बुनियादी ढांचे को देखकर पाठ्यक्रम का चयन करते हैं। छात्रों की व्यावसाय प्रभावित नहीं होती है, बल्कि उनकी व्यावसायिक पसंद को प्रभावित करने वाले अन्य कारक है।अध्ययन से पता चलता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रम पसंद में छात्रों की लिंग विशिष्ट नहीं है।

नेरूरकर (2020) ने व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण स्नातकों की रोजगार योग्यता का अध्ययन किया । शोध से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए - अध्ययन के गुणात्मक चरण के दौरान एकत्र अंतर्दृष्टि का रोजगार क्षमता के प्रति उपयोग करते हुए मैककिड और लिंडसे (2005) द्वारा भारतीय व्यावसायिक प्रशिक्षण स्नातकों के अनुरूप प्रस्तावित ढांचे को अनुकूलित किया गया। अनुभवजन्य रोजगार योग्यता ढांचे में चार घटक शामिल थे - व्यक्तिगत कारक, व्यक्तिगत परिस्थितियां, बाहरी कारक और संस्थागत कारक । अध्ययन के दौरान कैरियर की पहचान और नौकरी के प्रदर्शन के व्यक्तिगत कारक और बाहरी कारक के 144 एकत्रित साक्ष्यों के बाद संस्थागत कारकों को मूल ढांचे में जोड़ा गया ।

अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य

शिक्षक शिक्षा एवं व्यावसायिक उपयोगिता के क्षेत्र में अनेक शोध कार्य किए गए हैं। पूर्व अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक शिक्षा व्यक्ति की कार्यकुशलता, निर्णय क्षमता, आत्मविश्वास तथा सामाजिक समायोजन को सुदृढ़ बनाती है। किसी भी व्यावसायिक पाठ्यक्रम की सफलता उसकी व्यावहारिक उपयोगिता पर निर्भर करती है। बी.एड. पाठ्यक्रम का उद्देश्य केवल शिक्षक तैयार करना नहीं, बल्कि ऐसे सक्षम, उत्तरदायी एवं कुशल व्यक्तियों का निर्माण करना है जो समाज में ज्ञान, मूल्य एवं व्यवहार का प्रभावी संप्रेषण कर सकें।

वर्तमान समय में अनेक बी.एड. उपाधिधारक शिक्षण क्षेत्र में कार्यरत हैं, जबकि अनेक प्रशासन, प्रबंधन, प्रशिक्षण, परामर्श, सामाजिक सेवा एवं निजी क्षेत्र के विविध व्यवसायों में संलग्न हैं। ऐसी स्थिति में यह जानना आवश्यक है कि बी.एड. पाठ्यक्रम से अर्जित ज्ञान, कौशल एवं मूल्य उनके व्यावसायिक जीवन में किस सीमा तक उपयोगी हैं। यह अध्ययन बी.एड. पाठ्यक्रम की वास्तविक

उपयोगिता, व्यावसायिक प्रासंगिकता एवं प्रभावशीलता को स्पष्ट करता है। साथ ही, यह शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के पुनर्संरचना एवं गुणवत्तापरक सुधार हेतु दिशा प्रदान करता है।

इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थियों की रोजगार क्षमता, आत्मविश्वास एवं सामाजिक दक्षता को प्रभावित करती है। किन्तु बी.एड. उपाधिधारकों के व्यावसायिक जीवन में बी.एड. पाठ्यक्रम की उपयोगिता पर सीमित अध्ययन उपलब्ध हैं।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध से संबंधित शोध प्रविधियों का निम्न बिंदुओं में वर्णित किया गया है-

शोध का प्रकार

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रकार का था।

जनसंख्या

इंदौर शहर के शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय के बी.एड. उत्तीर्ण विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया था।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श के रूप में इंदौर शहर के 8 शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय का चयन सुविधा गैर यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक द्वारा किया गया था। चयनित महाविद्यालय में से 200 बी.एड. उत्तीर्ण विद्यार्थी सत्र 2015- 20 तक महिला तथा पुरुष विद्यार्थियों को चयनित किया गया था। ये विद्यार्थी विभिन्न विषय क्षेत्र तथा हिंदी व अंग्रेजी माध्यम से संबंधित थे।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में बी.एड. पाठ्यक्रम की उपयोगिता का अध्ययन करने हेतु शोधकर्ता द्वारा बी.एड. पाठ्यक्रम की उपयोगिता का अध्ययन हेतु प्रश्नावली का निर्माण किया गया। बी.एड. पाठ्यक्रम से संबंधित विषय, सिखाए गए कौशल, परियोजना कार्य, सूक्ष्म शिक्षण, सामाजिक पृष्ठभूमि, मनोविज्ञान, प्रबंधन, इंटर्नशिप, मूल्यांकन एवं मापन आदि पहलुओं पर आधारित थे।

A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

प्रदत्त संकलन

प्रदत्त संकलन हेतु सर्वप्रथम शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रधानाचार्य से संपर्क कर शोध के बारे में जानकारी तथा शोध के उद्देश्य से अवगत कराया गया, तत्पश्चात प्रधानाचार्य से अनुमति प्राप्त कर बी.एड. उपाधिधारकों की सूची प्राप्त की गई। उपाधिधारकों की सूची प्राप्त करने के पश्चात उपाधिधारकों से संपर्क कर शोध के उद्देश्य से अवगत कराया गया। इसके पश्चात उन्हें उपकरण देकर प्रदत्तों का संकलन किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत शोध की प्रवृत्ति मात्रात्मक तथा विवरणात्मक होने के कारण प्रदत्तों का विश्लेषण विषय वस्तु विश्लेषण द्वारा किया गया।

शोध के प्रमुख निष्कर्ष

- बी.एड. पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षण कौशल, संप्रेषण कौशल, समस्या समाधान कौशल, तकनीकी कौशल तथा सोच कौशल का विकास हुआ। इनमें शिक्षण कौशल का विकास सर्वाधिक पाया गया, जिसका उपयोग शिक्षक प्रभावशाली शिक्षण के लिए करते हैं।
- अध्ययन में यह पाया गया कि बी.एड. पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक एवं व्यक्तिगत मूल्यों का विकास करता है। विशेष रूप से सामाजिक मूल्यों का विकास अधिक हुआ, जिससे शिक्षक विद्यार्थियों के साथ सहयोगात्मक एवं संवेदनशील व्यवहार कर सके।
- आईसीटी (ICT) से संबंधित ज्ञान, जैसे— एम.एस. ऑफिस, इंटरनेट एवं अन्य तकनीकी साधनों का उपयोग शिक्षण प्रक्रिया को अधिक सरल, प्रभावशाली एवं रोचक बनाने में सहायक पाया गया।

- सूक्ष्म शिक्षण के अंतर्गत प्राप्त संवाद कौशल, विषयवस्तु प्रस्तुतीकरण तथा समस्या समाधान कौशल शिक्षण कार्य में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए।
- परियोजना कार्यों के माध्यम से उपाधिधारकों में रचनात्मकता, अनुसंधान क्षमता तथा व्यावहारिक ज्ञान का विकास हुआ। विशेष रूप से जीव विज्ञान एवं पर्यावरण परियोजनाएँ अधिक उपयोगी पाई गईं।
- समावेशी शिक्षा के ज्ञान ने शिक्षकों को विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने तथा उन्हें समान अवसर प्रदान करने में सक्षम बनाया।
- स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम के माध्यम से कक्षा प्रबंधन, सहयोगात्मक कार्य, शिक्षण कौशल एवं विविधता के समर्थन जैसे व्यावहारिक कौशल विकसित हुए, जो वर्तमान शिक्षण व्यवसाय में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए। शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन से शिक्षकों में विद्यार्थियों की मानसिक अवस्था, रुचियों एवं व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने की क्षमता विकसित हुई।
- मापन एवं मूल्यांकन विषय ने विद्यार्थियों की प्रगति का मूल्यांकन करने तथा शिक्षण की प्रभावशीलता को समझने में सहायता प्रदान की।
- बी.एड. पाठ्यक्रम के माध्यम से नेतृत्व क्षमता, अनुशासन एवं संस्थागत प्रबंधन संबंधी कौशलों का विकास हुआ, जिससे शिक्षक विद्यालयी गतिविधियों एवं प्रशासनिक कार्यों का सफल संचालन कर सके।
- बी.एड. करने के बाद उपाधिधारकों के व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, व्यवहार एवं शिक्षण दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले।
- अधिकांश शिक्षकीय पेशे से संबंधित उपाधिधारकों ने माना कि बी.एड. प्रशिक्षण पाठ्यक्रम वर्तमान शिक्षण व्यवसाय में अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि इससे नई शिक्षण विधियों, तकनीकों एवं विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने की क्षमता विकसित हुई।

अंततः शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि बी.एड. करने के बाद शिक्षकों के व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, व्यवहार, विचार अभिव्यक्ति एवं शिक्षण दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन आया। अधिकांश उपाधिधारकों ने माना कि बी.एड. प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ने उन्हें नई शिक्षण विधियों, विद्यार्थियों की मानसिक आवश्यकताओं तथा प्रभावी शिक्षण तकनीकों को समझने में सहायता प्रदान की, जिससे वे अपने शिक्षण व्यवसाय को अधिक सफल एवं प्रभावशाली बना सके।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि बी.एड. पाठ्यक्रम शिक्षकीय पेशे के लिए अत्यंत उपयोगी एवं प्रभावशाली है। यह पाठ्यक्रम केवल विषय ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षकों में शिक्षण कौशल, संप्रेषण क्षमता, नेतृत्व, अनुशासन, समस्या समाधान क्षमता एवं सामाजिक मूल्यों का भी विकास करता है।

बी.एड. प्रशिक्षण शिक्षकों को विद्यार्थियों की मानसिक, सामाजिक एवं शैक्षिक आवश्यकताओं को समझने में सक्षम बनाता है, जिससे वे शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली एवं छात्र-केंद्रित बना पाते हैं। आईसीटी, सूक्ष्म शिक्षण, समावेशी शिक्षा, स्कूल इंटर्नशिप तथा शिक्षा मनोविज्ञान जैसे घटक शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साथ ही, यह पाठ्यक्रम शिक्षकों में आत्मविश्वास, उत्तरदायित्व, सहयोगात्मक दृष्टिकोण एवं नैतिक मूल्यों का विकास करता है।

अतः कहा जा सकता है कि बी.एड. पाठ्यक्रम शिक्षकों के व्यक्तित्व विकास, व्यावसायिक दक्षता तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देता है और वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में इसकी उपयोगिता अत्यंत व्यापक एवं आवश्यक है।

संदर्भ सूची

- सक्सेना, एन. आर. , मिश्रा, बी. के. एवं मोहन्ती, आर. के. (2016). *अध्यापक शिक्षा,* ऐतिहासिक
- पृष्ठभूमि. आर. लाल पब्लिकेशन .
- रेड्डी, (1972). *माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यवसाय पसंद के संबंध में व्यावसायिक*
- *आवश्यकता का अध्ययन.* [प्रकाशित शोध प्रबंध] शोधगंगा.https://shodhganga.inflibnet.ac.in/
- जॉन, एम. (1981). *व्यावसायिक रुचि और आत्माअवधारणा के बीच संबंध का अध्ययन.*
- [प्रकाशित शोध प्रबंध] शोधगंगा. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/ .
- गुप्ता और रायजादा, (1991). *कर्नाटक राज्य में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम पर एक अध्ययन.*
- प्रकाशित शोध प्रबंध]/शोधगंगा. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/ .
- चालावाड़ी, ए.एस.आई. (1992). *कर्नाटक राज्य में उच्च माध्यमिक स्तर पर लड़कियों के लिए*
- *व्यावसायिक शिक्षा.* [प्रकाशित शोध प्रबंध] शोधगंगा. https:hdl.handle.net/10603/94961.
- तोरकातो, एस. (2006). *व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम पर एक अध्ययन और गोवा में उद्यमिता*
- *और रोजगारों के अवसरों का अध्ययन.* [प्रकाशित शोध प्रबंध] शोधगंगा.https://hdl.handle.net/10603/11865
- देवी, एस. (2014*). गुवाहाटी विश्वविद्यालय के तहत सामान्य डिग्री कॉलेजों में व्यावसायिक*
- *शिक्षा पाठ्यक्रम का एक मूल्यांकन.* [प्रकाशित शोध प्रबंध] शोधगंगा. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/ .
- नेरूरकर, एस. (2020). *व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण स्नातकों की रोजगार योग्यता.*
- [प्रकाशित शोध प्रबंध] शोधगंगा. https://hdl.handle.net/10603/337677

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL